P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

मध्यकालीन सन्त :– एक सामाजिक परिचय

अरविन्द सिंह चौहान
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर

सारांश

मध्यकालीन संतों की सामाजिक चेतना का अध्ययन विषय सन्तों की समाजवादी, प्रगतिवादी, क्रान्तिकारी विचारधारा तथा दर्शन के कारण महत्वपूर्ण रहा है। सन्त कवि साधारण जीवन जीकर भी (सादा जीवन उच्च विचार), निम्नवर्ग से सम्बन्धित होने पर भी आत्मगौरव इनमें कूट–कूट कर भरा हुआ था। यह काव्यधारा अनुभव से ज्ञान की तरफ अग्रसर होती हुई विशेष उपदेशवादिता–मर्म परिवर्तन का कार्य पूर्ण सफलता के साथ करती है। आधुनिक भारत के सामने जो ज्वलन्त समस्याऐं धर्म–समाज–संस्कृति को लेकर वर्तमान में आ रही है सन्त काव्यधारा भारत के प्रथम समाज सुधारवादी आन्दोलन की अगुवाई करके उनका समाधान मध्यकालीन विषम वातावरण में कर चुकी थी। इस कारण यह काव्यधारा कालजयी तथा इसका काव्य प्रासांगिक काव्य माना जाता रहा है।

मुख्य शब्द : मध्यकालीन संत, एक सामाजिक परिचय

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य का 1375 विक्रम से 1700 विक्रम संवत् का समय भक्तिकाल, भक्तियुग तथा पूर्वमध्यकाल नाम से अभिहित किया जाता रहा है। यह काव्यखड़ अपनी आदर्शवादिता तथा सामाजिकता हेतु विशेष रूप से प्रसिद्ध रहा है। इस काव्यखण्ड़ की प्रथम काव्यधारा ज्ञान को महत्व देकर चलती है जिसे ज्ञानमार्गी या ज्ञानाश्रयी अथवा सन्त काव्यधारा के नामों से भी संज्ञित किया जाता रहा है।

इस काव्यधारा के प्रवर्त्तक महाराष्ट्र के हिन्दी सन्तकवि नामदेव तथा आकाश धर्मागुरू रामानन्द माने गये इन्होंने सगुण के संग निर्गुण ईश्वर की भक्ति एवं सभी जातियों हेतु ईश्वर–भक्ति का विधान किया। इसी काव्यधारा के प्रमुख–प्रतिनिधि–कालजयी व्यक्तित्व सन्त कबीर रहें। कबीर (महान्) अपने समय के महान समाज–सुधारक, क्रान्तिकारी, आक्रोशित एवं मध्यकालीन विराट् व्यक्तित्वधारी कवि थे। इन्होनें अपनी ओजस्वी वाणीं से समाज को परिष्कृत करने का कार्य किया था।

किन्तु ध्यातव्य यह भी हैं कि कबीर के पूर्व तथा कबीर के उपरान्त भी अनेक ऐसे सन्तकवि रहें जिनका आगमन युगान्तकारी घटना थी।

कबीर पूर्व

1. रामानन्द
2. नामदेव

कबीर पश्चात्

1. दादूदयाल
2. गुरूनानक

उस समय की वर्तमान परिस्थितियों में जनता में आशावाद्, स्वाभिमान गर्व जगाने का कार्य कबीर के समय, कबीर के समय से पूर्व तथा कबीर के समय के बाद से निरन्तर–नियमितरूपेण चल रहा था। जिससे निराशा–गुलामी के भाव को त्यागकर भारतवर्ष तथा भारतीय पुनः स्वाभिमानी जीजिविषा को ग्राह्य कर रहे थे।

''ज़मीर जिन्दा रख
कबीर जिन्दा रख.....
सुल्तान भी बन जाऐं तो ; दिल में फ़कीर जिन्दा रख.....
होंसले के तरकश में, कोशिश का वो तीर जिन्दा रख.....
हार जा चाहें जिन्दगी में सब कुछ
मगर फिर से जीतनें की वो उम्मीद जिन्दा रख.....
जमीर जिन्दा रख
कबीर जिन्दा रख।।''

मुस्लिम आगमन से पूर्व ही भारतीय समाज जिसे हम हिन्दू समाज कह सकते है अपने मूल रूप से भ्रष्ट हो चुका था, मध्यकालीन समाज के पथभ्रष्ट तथा पतित हो जानें का मुख्यकारण सन्त काव्यधारा ने युगों–युगों से चली आ रही कुप्रथाओं–अन्धविश्वासों, वर्णव्यवस्था, जाति व्यवस्था को माना। समस्या–समाधान शैली में तद्युगीन यथार्थ का अंकन करते हुए सन्तों कवित्व की अपेक्षा समाज तथा सामाजिकता पर बल दिया। ओजस्वी वाणी में कुप्रथाओं का तथा मानव–मानव भेद स्थापन वाली परम्पराओं का खण्ड़न तथा मर्मस्पर्शी वाणी में शनै–शनैः आदर्शों का मण्ड़न इनके काव्य का मुख्य प्रयोजन था। 1

सन्तों की इसी क्रान्तिकारी, विद्रोही तथा आत्म–विश्वासी वाणी को सुनकर (स्वयं निम्न होने के उपरान्त भी आत्म–संघर्ष दर्शाना) तत्कालीन समय का दलित या निम्नवर्ग अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक बनता है। प्रत्येकजन में ईश्वर का निवास, आत्मा में ही परमात्मा के दर्शन तथा अहंबह्मास्मि का सन्देश देकर जीवन को आशावादी, स्वाभिमानी, लोक चेतनावादी बनाते हुए सन्त काव्यधारा के कवियों ने अपनी साहित्यिक ईमानदारी का परिचय दिया ; स्वयं निम्नवर्ग से सम्बन्ध रखने वाले सन्तकवि, अपनी संघर्षमयी वाणी को स्वअनुभूत सत्यों के आधार पर अभिव्यक्त करते है। सन्त काव्यधारा के कवियों का प्रबलमत था कि संसार की उत्पति, समाज–राष्ट्र–राज्य–धर्म की उत्पति का कारण मानव ही हैं; मानव समस्त संस्थाओं का हेतु हैं किन्तु मध्यकालीन समाज–सत्ता इसी मानव की मानवता का हनन कर रहा है।

दादू एकै आतमां, साहिबा है सब माहिं,
साहिब के नाते मिलै, भेष पंथ के नाहिं।'' [2]
''दादू माला तिलक सौं कुछ नहीं,
काहू सेती कांम, अतरि मेरे येक है अहनिसि हरि का नाम।।''[3]

सन्तों के द्वारा तत्कालीन विषम परिस्थितियों में अमृतास्वरूपा वाणी में लोकमंगलकारी, शिवेत्तरक्षयते काव्य का निर्माण किया गया।

उपदेशवादी प्रवृत्ति

दोहा शैली

भक्तिपरक गीत

पद शैली

इस सामाजिक प्रवृत्ति अथवा जीवनवादी काव्य का संक्षिप्त में विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता हैं कि इन सन्तों ने विषमयुगीन समय में मानवों को मानवता का पाठ पढ़ाया तथा समाज में फैली हुई कुरीतियों का समापन किया जैसे :– जाति–पाँति, बहुविवाह, पर्दाप्रथा, छुआछूत, दलित शोषण, उच्च–निम्न भेद, अमीर–गरीब का अन्तर, धर्माधिकारियों का वर्चस्व इत्यादि का इन्होनें खुलकर विरोध किया; समाज को सामाजिक तत्वों से सरोबारित करके इन्होनें आशावाद का मंगलनाद किया।

साहित्य में जब मानव–मानवता–प्रगतिशील तत्वों का समावेश कर उसे भक्ति–नीति में समन्वित किया जाता हैं तब वह साहित्य जीवनमूल्यपरक काव्य की श्रेणी में आता हैं। हिन्दी क्षेत्र में कालान्तर में शोध–अनुसन्धानों द्वारा इन्हीं विषय–वस्तु का विश्लेषण–अध्ययन–अवलोकन किया जाता हैं। इसी सन्दर्भ से हिन्दी में प्रथम, मध्यकाल की प्रथम काव्यधारा अपनी सामाजिक उपयोगिता के कारण महत्वपूर्ण रही हैं। सन्त काव्यधारा पूर्णत मानवतावादी–प्रगतिवादी–प्रयोगवादी–तत्कालीन समय से मोहभंग करने वाली हिन्दी की प्रथम स्वतन्त्र की विचारणा रखने वाली सामाजिक–स्वच्छन्द काव्यधारा रही है।

''संत कवियों का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सन्त कवियों ने भक्ति के अनुभूति–पक्ष को ही प्रधानरूप से चित्रित किया है। इन्होनें सगुणवाद, अवतारवाद और मूर्तिपूजा आदि को सर्वथा त्याज्य बताया और केवल निर्गुण ब्रह्मा की सत्ता को ही स्वीकार किया। सन्त काव्यधारा के अधिकांश कवि अवर्ण है। उन्होंने वर्णव्यवस्था की पीड़ा सही थी। अतः उनमें वर्णव्यवस्था पर तीव्र आक्रमण करने का भाव है। कबीर, रैदास, सेना, पीपा आदि सन्तों ने ईश्वर के नाम पर जातिवाद के विरूद्ध आवाज बुलन्द की एवं समझौते का रास्ता छोड़कर विद्रोह का क्रान्तिकारी मार्ग अपनाया। इन कवियों में भाषागत सहजता और लोकभाषा की ओर झुकाव था। देशाटन की प्रवृत्ति और भाव एवं अनुभावों पर आधारित होने के कारण सन्त कवियों की भाषा भी लोकभाषा होकर जनसमूह के भावों से जुड़ने में समर्थ हो सकी है।''[4]

''सबका मालिक एक''

''जीओं और जीने दो''

''ना हिन्दू–ना मुसलमान'' – का नारा देकर सन्त काव्यधारा जहाँ एक तरफ सौहार्द का वातावरण उपस्थित करती है वहीं दूसरी ओर धर्म–सहिष्णुता तथा वर्तमान राष्ट्र एकता के तत्वों का प्रवर्त्तन मध्यकालीन वातावरण में ही कर देती है।

''उन दिनों भारतवर्ष का हिन्दू समाज अनेक प्रकार की जातियों और सम्प्रदायों में विभक्त था। इसके अतिरिक्त शक्तिशाली इस्लाम धर्म का प्रवेश भी हो चुका था। अपनी भेदभाव पहले से ही बहुत जटिल सामाजिक व्यवस्था को और अधिक उलझाता जा रहा था। धार्मिक साधना के क्षेत्र में रामानन्द, नामदेव और कबीर जैसे कई महिमाशाली व्यक्तित्व प्रकट हो चुके थे जो जाति–पाँति तथा साम्प्रदायिक भेदभाव मिटाने का प्रयास कर चुके थे, पर भेदभाव की मनोवृत्ति कठोरतर सिद्ध हुई थी। जिस किसी ने जातिभेद को हटाने का प्रयास किया, उसी के नाम पर एक नयी जाति और एक नये सम्प्रदाय की स्थापना हो गयी। जिस किसी ने झाड़ू देकर मन्दिर के आँगन को साफ करने का प्रयत्न किया, उसी के नाम पर कोई ईंट–पत्थर आँगन को साफ करने का प्रयत्न किया, उसी के नाम पर कोई ईंट–पत्थर आँगन में और डाल दिया गया। भेदभाव बहुत ही शक्तिशाली सिद्ध हुआ, अभेद और एकता की बात कमजोर साबित हुई।'' [5]

''भक्तिकाल की विषम राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों में आशा की ज्योति बिखरने का कार्य सन्त काव्यधारा के कवियों ने किया। उन्होंने तत्कालीन धार्मिक मान्यताओं को अपने जीवन के व्यापक अनुभव के आधार पर जनसामान्य के लिए बोधगम्य बनाया, जिसमें युगीन परिवेष की सबल भूमिका रही है। सभी सन्त कवि वर्णवादी समाज को तोड़कर मानवतावादी समाज की स्थापना के लिए प्रयत्नशील थे। धार्मिक सहिष्णुता को

सन्त कवियों ने सामाजिक विकास के हेतु आवश्यक माना।'' [6]

सन्त कवियों ने बाह्यडम्बरों का खण्ड़न किया। मूर्ति–पूजा, तीर्थाटन, व्रत, रोजा, नमाज में इन्हें कोई विश्वास न था। हिन्दू–मुसलमान दोनों का इन्होंने अन्धविश्वासों, रूढ़ियों, धर्मान्धता के लिए फटकारा। वे धर्म के सामान्य तत्वों–सत्य, अहिंसा, प्रेम, करूणा, संयम, सदाचार को समाज एवं मानव हेतु आवश्यक मानते है। ये कवि जातिप्रथा को भी विरोधी थे। अधिकांश सन्त कवि स्वयं निम्न वर्ग से सम्बन्धित थे अतः उच्चवर्ग की मुखर आलोचना सन्त काव्य में अस्वाभाविक न थी।

समाज को एक करने, मानवधर्म स्थापना, हिन्दू–मुस्लिमों के मध्य सौंहार्द वातावरण हेतु खण्ड़न–मण्ड़न की प्रवृत्ति–समाजसुधार करते हुए कुप्रथाओं पर प्रहार सन्त काव्यधारा की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ थी।

सिद्ध तथा नाथों से साहसपन, लोकभाषा, समाजसुधार, उपदेश, ज्ञान–योग की प्रवृत्तियाँ ग्रहण कर सन्त काव्यधारा ने इसे सूफियों के प्रेमपीर से भी जोड़ा और तद्युगीन समय में शासकों की लौह तथा रक्त की नीति से बलपूर्वक कराये जा रहे धर्म–परिवर्तन का प्रत्युत्तर इन्होनें हृदय–परिवर्तन तथा मानव–महिमा का गुणगान करके दिया। आदर्श संग यथार्थ, राजा संग प्रजा, हिन्दू संग मुसलमान, निर्गुण संग सगुण ईश्वरीय तत्व, समस्या संग समाधान, प्रगतिवादी संग प्रयोगवादी शैली, सामाजिकता संग असामाजिकता, वैराग्य संग गृहस्थ तत्व इत्यादि का समन्वय प्रस्तुत करना सन्त काव्यधारा के कवियों का महात्म्य प्रयास रहा है जिस कारण इनका काव्य हिन्दी का अमरकाव्य एवं अमूल्य निधि है वहीं ये सन्तमना कवि परवर्ती साहित्यकारों हेतु देवतुल्य आदर्श है।''

निष्कर्ष

मानवतावाद के साथ आधुनिक विचार सन्त काव्यधारा के प्रमुख लक्षण रहे। अपने समय संघर्ष और स्वानुभूत सत्य को यथार्थ और आदर्श के मध्य सुन्दर समन्वय करते हुए स्थापित करना सन्त काव्यधारा का वैशिष्टीय रहा। इस शोध पत्र का उद्देश्य सन्तों की सामाजिक चेतना का मुल्यांकन करना रहा है उस सन्दर्भ में देखा जाये तो इनकी सामाजिक चेतना का मूल्य सूर और तुलसी के समान ही है वरन् यह भी कहा जा सकता है कि उनसे बढकर है क्योंकि सुर और तुलसी हिन्दू धर्म तक सीमित रहे जबकी सन्त काव्यधारा हिन्दू और मुसलमान दोनों के मध्य समानरूप से सम्मानित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, मा.शि.बोर्ड राजस्थान, पृ.सं. 49*
2. *दादूदयाल :– परशुराम चतुर्वेदी, पृष्ठ संख्या 205*
3. *दादूदयाल :– परशुराम चतुर्वेदी, पृष्ठ संख्या 206*
4. *हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, मा.शि.बोर्ड राजस्थान, पृ.स. 40*
5. *प्रतियोगिता साहित्य, नेट – द्वितीय प्रश्न पत्र हिन्दी, पृ.सं. 83*
6. *सिख गुरूओं का पुण्य स्मरण :– हजारी प्रसाद द्विवेदी ग. भाग 6, पृष्ठ संख्या 243*